IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका

श्रीमती राजू पंसारी

व्याख्याता

प्रस्तुतकर्त्री

अंजू गुर्जर

एम.एड.छात्रा

सारांश –

मनुष्य एक सृजनशील प्राणी है। हर मनुष्य में सृजन करने की स्वाभाविक प्रवृति होती है। इसका प्रदर्शन वह बाल्यकाल से ही करने लगता है। वह अपनी जरूरत के अनुसार कुछ न कुछ बनाता है। मूल प्रवृति होने के कारण उसे पृथक से सीखना भी नहीं पड़ता है। वह अपने आसपास की परिस्थितियों से सृजन की शक्ति को विकसित कर लेता है। सृजन मनुष्य के भीतर छिपी प्रतिभा, सौंदर्य व कल्पना को साकार रूप देने का सशक्त माध्यम भी है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया है।

प्रस्तावना –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बालक के समाजीकरण के विभिन्न तत्वों में परिवार का प्रमुख स्थान है, परिवार वह संस्था है, जिसमें बालक का जन्म होता है, विकास होता हैं परिवार शिक्षा का अनौपचारिक साधन है और इतना होते हुए भी उसका महत्व अपने में अत्यधिक है, दो बच्चे शिक्षकों से प्रभावित होते हो, समान रूप से व्यवहार करते हो, फिर भी वे अपने सामान्य ज्ञान, रूचियों, भाषण, व्यवहार और नैतिकता में अपने के कारण जहां से वे आते है, पूर्णतया भिन्न होते है।

माण्टेसरी ने बालक की शिक्षा में घर का महत्वपूर्ण योगदान का अनुभव किया है, उन्होंने विद्यालय को बचपन का घर कहा है। घर ही वह स्थान है, जहां से महान गुण विकसित होते हैं, निजकी सामान्य विशेषता सहानुभूति है।

समस्या का औचित्य –

आज का विद्यार्थी एक भावी नागरिक है। प्रारम्भ के चार–पांच साल बालक अपने परिवार से घनिष्ठ रूप से जुड़ा रहता है। इस काल में बालक अपने समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहता है, अतः बालक की सृजनात्मकता पर पारिवारिक वातावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। विद्यलाय प्रवेष के बाद भी अधिकांष समय बालक परिवार में ही व्यतीत करता है। इस प्रकार सृजनात्मकता तथा बालक के समुचित विकास की संभावना पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करती है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी तथा वे बालक तथा बालिकाएं है, जो कक्षा 6, 7 व 8 तक अध्ययनरत हो उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में सम्मिलित है।

सृजनात्मकता –

सृजनात्मकता या सृजनशीलता अंग्रेजी भाषा के क्रियेटिविटी का हिन्दी रूपान्तरण है। इसका अर्थ है मौलिक रूप से उत्पन्न होना या अस्तित्व में आना होता है। तथा जब तक विशेषण के रूप में प्रयोग होता है तो उसका अर्थ योग्यता, शक्ति, कल्पना आदि से लगाया जाता है।

पारिवारिक वातावरण –

परिवार बालकों की प्रथम पाठशाला होती है, जहां उसका व्यक्तित्व आकार ग्रहण करता है। सभी रूचियों, आदतों, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं के विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

शोध के उद्देश्य –

1 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

2 उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

3 उच्च प्राथमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध के परिकल्पना –

1. उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध की विधि –

किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए शोधार्थी का प्रमुख उद्देश्य समस्या का हल ढूंढना है। वर्तमान समय में शोध कार्य हेतु अनेक शोध विधियों का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव के अध्ययन के लिए शहरी क्षेत्र के निजी विद्यालय व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के 150 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया जिसमें निजी विद्यालय में 75 विद्यार्थी व सरकारी विद्यालय के 75 विद्यार्थी को सम्मिलित किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

1. शोधकर्त्री ने विद्यार्थियों की सृजनात्मकता मापनी के लिए बाकर मेहन्दी द्वारा निर्मित Creativity Test का शाब्दिक परीक्षण
2. पारिवारिक वातावरण मापन हेतु करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित Home Environment Inventory (HEI) का उपयोग किया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

शोध कार्य में विश्वसनीयता परिणाम निष्चित करने हेतु उच्च व विश्वसनीयता सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी – परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध का परीसीमांकन –

1 क्षेत्र – यह अध्ययन जयपुर क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित किया गया है।

2 स्तर – यह अध्ययन केवल उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है।

3 लिंग – यह अध्ययन छात्र–छात्राओं दोनों पर किया गया है।

4 न्यादर्श – इस अध्ययन के लिए 150 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में कर अध्ययन उन तक सीमित किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण –

परिकल्पना – उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

क्र.सं.	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	टी.मूल्य	परिणाम
1	निजी विद्यालय के विद्यार्थी	75	20.41	2.30	1.27	स्वीकृत
2	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	75	19.85	3.17		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है। कुल निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या 75 पर मध्यमान 20.41, प्रमाणिक विचलन 2.30 व टी मूल्य 1.27 प्राप्त हुआ है। वहीं सरकारी विद्यालय के विद्याथ्रियों की संख्या 75 पर मध्यमान 19.85, प्रमाणिक विचलन 3.17 व टी मूल्य 1.27 प्राप्त हुआ है। डी एफ 148 सार्थकता स्तर पर 0.05 पर टी तालिका मूल्य 0.198 प्राप्त हुआ चूंकि गणना से प्राप्त मान 1.98 से कम है, अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

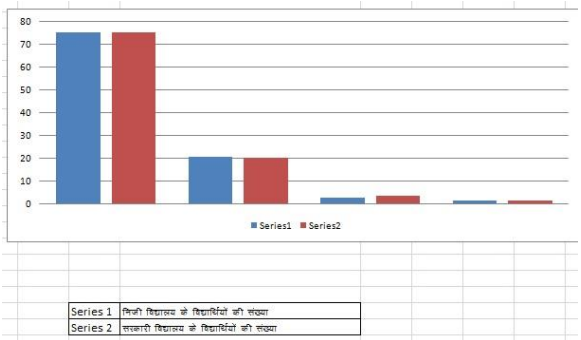

शोध निष्कर्ष –

शोधकर्त्री को अपने आंकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि परिवार के वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर पड़ता है।

शोध अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता एवं संस्तुतियाँ –

1. बच्चों के पारिवारिक वातावरण का बच्चों की सृजनात्मकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, अतः परिवार का दायित्व है कि वह बच्चों को उचित वातावरण प्रदान करे।
2. परिवार को ऐसे अवसर एवं परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए, जिससे बालकों में सृजनात्मकता का विकास हो सकें।
3. यदि परिवार में सम्बधता, अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता जैसे गुणों को विकसित किया जाए तो अधिक सृजनात्मकता बालक विकसित किये जा सकते है, इसलिए सभी परिवारों को इन गुणों का विकास करना चाहिए।
4. परिवार बच्चों को स्वतंत्रता प्रदान करे जिससे बालक पुरानी रूढ़िगत परम्पराओं का त्याग कर नवीन विचारों को ग्रहण कर एवं अधिक सृजनशील बन सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. सिंह कपिल एच.के. ममता (2008) सांख्यिकी के मूल तत्व, अग्रवाल पब्लिकेशन्स
2. कुमार, सुधीर एस.ए. (1992) अरूणाचल के माध्यमिक स्तर के विद्याथ्रियों के मध्य सृजनात्मकता के सामाजिक शैक्षिक संबंध, Indian Education Review Vol 27(1)28-106
3. सोमल, एन (1990) छात्र एवं छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि एवं नियोजन के मध्य संबंध पारिवारिक वातावरण कारकों का प्रभाव "Indian Journal of Psychometry and education volume 36(2) July 2005
4. अख्तर ए एण्ड सक्सेना बी.बी. (2013) Home Environment Scale, Agra, Manasvi
5. www.researchinedication.in
6. web.http://Wikipedia.org/studentsatisfaction
7. www.shodhganga.inflibnet.ac.in
8. www.dessertationtopic.com